

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 11

कायर मत बन

(नरेंद्र शर्मा (1913-1989))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



नरेंद्र शर्मा

कवि परिचय

जन्म :- सन् 1913 में उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिलांतर्गत जहाँगीर नामक स्थान में

शिक्षा:- प्रारंभिक शिक्षा वहीं हुई और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कर्म जीवन:- वाराणसी के काशी विद्यापीठ में शिक्षक नियुक्त हुए। इसी दौरान देश के स्वतंत्र आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें नजरबंद होना पड़ा। फिल्म जगत से आकर्षित होकर वे मुंबई चले गए और वहाँ फिल्मों के लिए गीत लिखते रहे। बाद में 'आकाशवाणी' में विविध भारती' कार्यक्रम के संचालक नियुक्त हुए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने हिन्दी को खूब बढ़ावा दिया और सुरीले हिन्दी गीतों के प्रसारण के जरिए 'विविध भारती' कार्यक्रम को अत्यंत लोकप्रिय बनाया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

गीतों एवं कविताओं के विषय:- व्यक्तिगत प्रणयानुभूति, विरह - मिलन के चित्र, सुख-दुःख के भाव, प्रकृति - सौन्दर्य, आध्यात्मिकता, रहस्यानुभूति, राष्ट्रीय भावना और सामाजिक विषमता के चित्रण के साथ विषयगत विविधता सहज ही देखी जा सकती है। मूलतः भावूक और कल्पनाशील कवि होने पर भी उनकी कुछेक कविताओं में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के कारण प्रगतिशीलता के भी दर्शन होते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रचनाएँ :- 'प्रभात फेरी', ‘प्रवासी के गीत’, ‘पलाशवन’, ‘मिट्टी के फूल’, 'हंसमाला', 'रक्त चंदन’, ‘कदली वन’, ‘दौपदी' (खण्डकाव्य), 'उत्तर जय' (खण्डकाव्य), और 'सुवर्ण’ (खण्डकाव्य) आदि काव्य-कृतियाँ हैं। 'कड़वी मीठी बातें' उनका कहानी संग्रह है।

काव्य-भाषा:- सरल, प्रांजल एवं सांगीतिक लय-युक्त खड़ी बोली है। आत्मीयता, चित्रात्मकता और सहज आलंकारिकता उनकी काव्य-भाषा के तीन निराले गुण हैं ।

मृत्यु :- सन् 1989

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

कायर	:	ভয়াতুৰ
राह	:	পথ
पाहन	:	পাথৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca Foundation



ले-दे कर जीना, क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना !
कुछ न करेगा ? किया करेगा-
रे मनुष्य - बस कातर क्रंदन ?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

ले-दे कर जीना	:	আপোচ কৰি জীয়াই থকা
गम के आँसू पीना	:	মনৰ দুখক মনতে দমাই ৰখা
खून-पसीना	:	বহুত কষ্ট কৰা
कातर क्रंदन	:	আর্ত বিলাপ, কষ্টত আকুল হৈ কন্দা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca Foundation



'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर !
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर !

'युद्धं देहि	:	যুদ্ধ দিয়া
पामर	:	দুষ্ট, নীচ
तस्कर	:	বেয়া কাম কৰা ব্যক্তি
प्रीति	:	প্রেম
दुहाई	:	কোনো কথাক উচিত প্রমাণকৰিবলৈ অন্য কোনো কথা জোৰা দি কোৱা



प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

प्रतिहिंसा	:	হিংসাৰ বদলি কৰা হিংসা
अपावन	:	অপবিত্ৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



तेरी रक्षा का न मोल है,

पर तेरा मानव अमोल है!

यह मिटता है, वह बनता है,

यही सत्य का सही अमोल है!

मोल	:	মূল্য, দাম
मानव	:	মনুষ্য, মানৱতা
अमोल	:	অমূল্য, যাক মূল্য দি কিনিব নোৱাৰি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,

कर न दुष्ट का आत्म-समर्पण !

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

सर्वस्व : সকলো

मनुज : মনুৰ পৰা জন্মা, মনুষ্য, মানব

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सारांश

संकलित 'कायर मत बन' शीर्षक कविता शर्मा की उत्कृष्ट रचनाओं में से अन्यतम है। इस प्रसिद्ध कविता में कवि ने मनुष्य मात्र से यह आग्रह किया है कि वह और कुछ भी बने, पर कायर कभी मत बने। मनुष्य को चाहिए कि उसके मार्ग पर आनेवाली बाधाओं से वह साहस और दृढ़ता के साथ लड़े, कभी भी उनसे समझौता न करे, निराश होकर माथा न पटके, रोए-गिड़गिड़ाए नहीं, कभी दुःख के आँसू न पीए। 'युद्धं देहि' (लड़ाई करो) कहकर अगर कोई दुष्ट और नीच व्यक्ति सामने आ जाए, तो मनुष्य को चाहिए कि या तो प्यार के बल पर उसे जीत ले, नहीं तो उसकी हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा से दे।

किसी भी स्थिति में अहिंसा की दुहाई देते हुए पीठ फेर कर वह न भागे। कवि ने माना है कि हिंसा के बदले में की जाने वाली हिंसा मनुष्य की कमजोरी को दर्शाती है, परन्तु कायरता उससे अधिक अपवित्र है। कवि ने कहा है कि मानवता अमूल्य है, उसकी रक्षा के सामने व्यक्ति की सुरक्षा का कोई मूल नहीं है। सत्य तो यह है कि व्यक्ति के आत्म-बलिदान से मानवता अमर बनती है। युगों से संचित मानवता व्यक्ति को खून-पसीने से सींचती है। अतः मनुष्य के लिए उचित यही है कि वह कभी कायर न बने और अपना सब कुछ मानवता पर न्योछावर कर दे।

मूल्यांकन



1 कविता का केंद्रीय संदेश क्या है ?

क धन का महत्व

ख शांति का त्याग

ग कायरता से बचना

घ एकांत जीवन

मूल्यांकन



2 कवि किसे "पाहन" कहता है ?

क मित्र को

ख शत्रु को

ग मार्ग की बाधाओं को

घ प्रकृति को

मूल्यांकन



3 कवि मनुष्य से क्या अपेक्षा करता है ?

क भाग जाना

ख संघर्ष करना

ग चुप रहना

घ दूसरों पर निर्भर रहना

मूल्यांकन



4 कायरता को कवि ने कैसा बताया है?

क सामान्य

ख अपावन

ग आवश्यक

घ लाभकारी

मूल्यांकन



5 | कविता में किस भावना का विरोध किया गया है ?

क प्रेम

ख करुणा

ग कायरता

घ परिश्रम